सुदामा मौसी का ज्ञान

बात बहुत पुरानी है लेकिन सच्ची है। चूँकि जब की यह बात है तब तो शायद हमने यह सोचा भी न हो कि ऐसा माध्यम होगा जिससे मैं इसे बहुत सारे लोगों से बाँट सकूँगा, इसलिए केवल घटनाओं को जोड़ने के लिए कल्पना का सहारा लूँगा। यही कल्पना इस सच्ची घटना को कहानी के रूप में बदलेगी! तो प्रिय पाठकों अगर यह कहानी आप को पसंद आये तो प्रतिक्रिया मेरे ईमेल के पते पर अवश्य भेजियेगा।

हाई स्कूल की परीक्षा के बाद मैंने जिद पकड़ ली कि अब की बार मुझे चाचा की ससुराल जाना ही है। वहाँ मुझे बहुत अच्छा लगता था। हाला कि मेरे चाचा की ससुराल जिसे मैं नाना का गाँव कहता था बहुत ही छोटा सा गाँव है। मेरे चाचा के कोई औलाद न होने के कारण चाचा ने मुझे गोद ले लिया था इस लिए वहाँ भी मेरी आवभगत बिल्कुल सगे नाती जैसी होती थी। सुदामा मौसी जो की मेरे नाना की सबसे छोटी संतान हैं मुझसे बहुत ही हिली थीं। वह नाना की सबसे छोटी संतान थीं। बाकी दोनों बेटे जो कि उनसे बहुत बड़े थे पटना और बनारस में अपने परिवार के साथ रहते थे। बस कभी-कभार गरमियों में आ जाते थे। वह लोग बहुत अमीर थे। मेरे नाना भी अपने गाँव के जमीदार थे। बहुत सारे खेत थे। बड़ा सा आमों का बाग था। तीन-चार पंप थे। ट्रैक्टर था।

सुदामा मौसी मुझे बहुत प्यार करती थीं। थीं तो वह मुझसे बस तीन साल बड़ी लेकिन वह बहुत दबंग लड़की थीं। जब भी मैं गरमियों में जाता तो मुझे वहाँ बहुत मजा आता। आम के बाग की रखवाली करते और घूमते। गाँव में नाना अकेले ठाकुर थे बाकी अहीर और दूसरी छोटी जाति के लोग ही रहते थे। सुदामा मौसी को सभी बिट्टन कहते।

चूँकि इससे पहले मुझे वहाँ गये तीन साल हो गये थे, इसलिए मैं काफी रोमांचित था। मैं खुद अब पहले वाला राजेश नहीं रह गया था तो वह भला अब पहले जैसी कहाँ होगीं! वहाँ पहुचकर देखा तो वह सचमुच में बदल गयीं थीं। अब वह जवान हो गयी थीं। पूरा शरीर भर गया था। पहले वह घाघरी और चोली पहनती थीं, लेकिन इस बार उन्होंने शलवार कमीज पहन रक्खी थी। मुझे देखते ही उन्होंने लिपटा लिया। हालाकि यह उनका स्नेह था, लेकिन मुझे अजीब-सा लगा। मेरा सीना उनकी

© 2008, http://www.antarvasna.com

बड़ी छातियों से जब मिला तो मेरी हालत अजीब हो गयी। ऐसा उन्होंने पहली बार नहीं किया था, बल्कि वह पहले भी ऐसे ही मिलतीं, लेकिन अब हम बदल गये थे। वह बड़ी हो गयीं थीं और मै जवान हो रहा था। साथ पढ़ने वाले लड़कों के बीच जो जवानी के लक्षणों से अनजान होते थे वह भी सब जानने लगते थे। मेरे अन्दर भी इस उम्र की स्वाभाविक वृत्तिया पनप गयी थीं। बल्कि कुछ अधिक ही।

पता चला कि बड़े मामा का परिवार भी पटना से आया था, सब तो चले गये, लेकिन उनकी बड़ी बेटी नीलम रुक गयीं। नीलम के बारे में मैने सुना तो था, लेकिन देखा तो आँखें खुली रह गयीं। वह सुदामा बुआ से एक साल छोटी थीं, लेकिन शरीर से पूरी जवान औरत दिखती थीं। सच कहूँ तो मैं क्या कोई भी उन्हें देखता होगा तो उनकी छातियों पर ही उसका ध्यान जाता होगा। मैंने सोचा! जैसे दो मटके सामने बाँध दिये गये हो। पहली बार वह जब मिली तो उन्होंने स्कर्ट और टॉप पहन रक्खी थी। में उन्हें देखकर देखता ही रह गया। उन्हें भी शायद इस बात का अनुमान हो गया, क्यों कि उन्होंने उसी समय सुदामा मौसी की तरफ देखकर कुछ उनके कान में कहते हुए मुस्कुराने लगीं। तभी सुदामा मौसी की चुन्नी गिर गयी। मेरे सामने ही। नीलम ने उसे लेकर अपने कधे पर डाल लिया और जोर से हँसीं।

शाम तक मैं उनसे भी घुल-मिल गया। रात में खाने में नानी ने ढेर सारे पकवान बनाये थे। खाना खाकर हम सग आँगन में लेटने गये। बहुत देर तक बातें होते रहीं। नीलम दीदी की चारपाई पर मैं सुदामा मौसी बैठे। नानी और नौकरानी सुखिया नानी भी वहीं थी। बात करते करते नीलम और सुदामा मौसी दोनों ही मुझे घौल-धप्पे लगाने लगीं। बैठे-बैठे जब मैं थक गया तो मैं उसी चारपायी पर अधलेटा हो गया। मेरा पैर सुदामा मौसी की कमर से लग गया, न जाने किस भावना के तहत मैंने वहाँ से पैर को हटाया नहीं, बल्कि एकाध बार अँगूठे से उनकी कमर को खोद भी दिया। दूसरी तरफ नीलम दीदी भी अधलेटी हुईं तो उनका पैर मेरी दोनों टाँगों के बीच में आ गया। मैंने जानबूझकर आगे खिसकर अपने लिंग से उनके पैरों में स्पर्श करा दिया। उन्होंने पहले तो अपने पैर को पीछे किया, लेकिन फिर आगे कर दिया। उनका पैर रह-रहकर मेरे लिंग से स्पर्श करने लगा, लेकिन मैंने अपनी साँसे रोकरक स्वयं को स्थिर कर लिया , मगर उसके तनाव को भला कैसे रोक सकता था? उस समय मैं सिर्फ पैजामा पहने था। असल में अभी तक पैंट या पैजामें के नीचे चड्डी पहनता ही नहीं था। उन्होंने

© 2008, http://www.antarvasna.com

अपने पैर को एक बार सिमेटकर फिर फैलाया तो उनके पैर का पंजा एकदम से मेरे तने लिंग के ऊपर आ गया। उन्होंने हटाया नहीं। मेरी हालत खराब होने लगी, फिर भी हिम्मत करके मैंने अपनी पोजीशन बदली नहीं। उन्होंने सुदामा बुआ से कुछ धीरे से कहा तो वह मेरी तरफ आ गयीं और मेरे बालों में अँगुलिया डालकर फरेने लगीं। वह पहले भी ऐसा करती थीं, लेकिन इस बार मेरे अन्दर एक अजीब सी मदहोशी छाने लगी। मैंने भी हिम्मत करके एक हाथ उनकी जाँघों पर इस तरह रख दिया मानों ऐसा अनजाने में हुआ हो।

दूसरे दिन हम लोग सुबह ही बाग रखवाली के लिए निकले। मटरू काका जो कि हमारा ट्रैक्टर भी चलाते थे उनका परिवार ही बाग की रखवाली करता था, लेकिन अब हम लोगों के कारण वह लोग नहीं आने वाले थे। यद्यपि अभी आमों के पकने में काफी दिन थे, लेकिन अमियाँ की तो देखभाल करनी थी। बाग में एक छप्पर था। जिसे लू और हवा से बचने के लिए तीन तरफ से घेर दिया गया था। असल बात तो यह थी कि रखवाली तो बस नाम की थी, वरना किसी की इतनी हिम्मत नहीं थी कि बाग की तरफ आँख उठाकर देखे।

सुदामा मौसी घर के कामों को समेटकर आने वाली थीं, मैं और नीलम दी पहले निकल गये। बाग घर से दूर था। सुदामा मौसी हम लोगों का खाना लेकर मटरू काका के साथ आने वाली थीं। उनको खेतों की सिचाई के लिए पंप चलाना था। उनकी पत्नी वहाँ पहले से ही थीं। गाँव के सिवान से निकलते ही नीलम दी ने कहा, "राजेश तुम बड़े हो गये हो।"

मैं चुप रहा। उनकी तरफ देखने लगा। और उनके साथ चल रहा था।

उन्होंने अचानक मेरे बिल्कुल निकट आकर हाथ बढ़ाकर मेरे लिंग को पैजामें के ऊपर से छूते हुए कहा, "बहुत कड़ा रहने लगा है।

मैं तो उनके इस स्पर्श से सिहर सा उठा। जैसे किसी ने करंट का झटका दे दिया हो।

उन्होंने फिर कहा, "किसी बिल में गया?"

हालांकि मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाह रही थीं, लेकिन मैने बुद्धू बनते हुए कहा, "मै

© 2008, http://www.antarvasna.com

समझा नहीं।"

"चलो हटो! आजकल के लड़के हरामी होते हैं।"

मरे जी में आया कि कहूँ कि लड़कियाँ? लेकिन कहा नहीं।

"अभी तक किसी लड़की की किये हो?" वह बोलीं।

"क्या?" मैंने अनजान बनने की कोशिश की ।

उन्होंनें मेरे लिंग को फिर से छुआ तो वह एकदम से कड़ा हो गया था। वह बोली, "बुद्धू न बनाओ।"

मैं समझ गया कि मेरी चोरी पकड़ी गयी। मुझे थोड़ी शरम भी आ रही थी। मैंने सोचा कि बेटा अगर की शरम तो फूटे करम, बोला, " आप का मतलब है चुदाई? अभी नहीं, सपने में तो बहुत बार निकल जाता है।"

"क्या?"

"बीज।" हमारे गाँव में जो निकलता है सपने में उसे लड़के बीज ही कहते हैं।

"जहाँ से निकलता है दिखाओ!" नीलम दीदी ने इधर-उधर देखते हुए कहा, "यहाँ कोई नहीं देखेगा।" चारो तरफ सुनसुनसान था। मई की गरमी सुबह से आरम्भ हो जाती थी।

"मुझे शरम आती है।"

"मुझसे क्या शरमाना?"

"कोई जान जायेगा कि मैंने आप को यह दिखाया तो खैर नहीं।" मैंने अपने लिंग की तरफ इशारा करके कहा।

"यह क्या लगा रखा है? इसका साफ नाम क्यों नहीं लेते?"

"नूनी!"

© 2008, http://www.antarvasna.com

"हाय राम! तुम्होरे मुँह से यह कितना अच्छा लगा। दिखा न!"

मैंने फिर चारों तरफ देख कर अपना शर्ट ऊपर उठाकर मोड़ा और पैजामें के नाड़े को खोल दिया और पैजामें को नीचे कर दिया। मेरी खड़ी नूनी सामने आगयी। हम चलते रहे। वह अजीब निगाहों से उसे देखती रहीं। फिर बोलीं, बाल को बनाते नहीं?"

"बाल?"

"झाँट!"

उन्होंने मेरी झाँट को नोच लिया। मैं दर्द से सित्कार उठा। वह फिर बोलीं, "सच अभी किसी को नहीं चोदा है?"

"आप तो नीलम दी!"

"मन होता है?"

मैंने हिम्मत करके कहा, "हाँ"

"अपनी सुदामा मौसी को चोदोगे?"

"हट!" कहकर मन में आया कह दूँ कि तुम चोदवा लो!

"क्या हट! वह अच्छी नहीं लगती?"

मैं चुप ही रहा।

"मैं अच्छी लगती हूँ"

"हाँ"

"क्यों?"

"आप सुन्दर हैं।"

© 2008, http://www.antarvasna.com

"हट!"

"आप की ये बहुत अच्छी हैं!" मैंने उनकी छातियों की तारफ इशारा करके कहा।

"बहुत बड़ी हैं।"

"सुदामा बुआ की?"

"मुझे क्या पता?"

"क्यो उनके सामने आने पर आँख बन्द कर लेते हो?" मैं चुप रहा।

वह मेरी नूनी को पकड़कर चलने लगीं। मुझे लगा कि अभी मेरा बीज निकल जायेगा। मैंने कहा, "अब छोड़िये नहीं तो निकल जायेगा।"

उन्होंने उसे छोड़ दिया तो मैंनें पैजामा बांध लिया। लेकिन शर्ट वैसी ऊपर बंधी रही। नूनी तनी हुई दिखाई दे रही थी। उनकी चुन्नी गले में सिमटी थी। दोनों छातिया चलने पर हिल रही थीं। मुझे लग रहा था कि वह कड़ी भी हो गयी हैं। वह बोलीं, पटने में तो तेरह साल की लड़की और लड़के चुदाई का खेल खेल खेलने लगते हैं। तुम तो गाँव में रहते हो। यहा तो किसी को कहीं आने-जाने की मना भी नहीं किसी को भी चोद सकते हो।"

"कोई तैयार नहीं होती और मुझे डर लगाता है।"

"मन तो होता है?" वह कहकर चुप हो गयीं। मैं नहीं समझ पाया कि वह अपने या मेरे मन होने की बात कर रही थीं। हम बाग में पहुँच गये। वहाँ छप्पर में एक चारपाई थी और दो खाद की बोरी के बने बिस्तर थे। हम लोगों को देखते ही मटरू काका की पत्नी खड़ी हो गयीं और बातें करने लगीं। पता चला कि खेत सींचने हैं, लेकिन बिजली ही नहीं है। मटरू काका देखकर गाँजा पीने चले गये हैं। यह सूचना देकर वह इधर-उधर की बातें करने लगीं। उनकी मजे की बातें चल ही रही थीं कि तभी नाना के साथ सुदामा मौसी भी आती दिखीं। नाना आये थे खेतों की सिचाई के बारे में मटरू काका से बात करने लेकिन उन्हें वहाँ न पाकर वह नाराज हुए और फिर वहीं हमारे पास बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगे। जब मटरू आये तो उन्हें डाँटकर सिचाई का ध्यान रखने के लिए हम लोगों का भी ध्यान

© 2008, http://www.antarvasna.com

रखने के लिए कहकर चले गये।

नाना के जाते ही बिजली आ गयी। काकी घर चली गयीं। वह पानी चलाने गये।

"चलो हम लोग भी नहायें!" नीलम दीदी ने कहा।

"घर ही बता देती तो वहाँ से कपड़े लाते क्या पहन के नहायेंगे?" सुदामा बुआ बोलीं।

"चुन्नी तो है।"

"मेरे पास तो गमछा है।" मैं गरमियों हमेशा ही गमछा रखता हूँ।

"टंकी में मजा आता है।" इस बार सुदामा मौसी ने कहा।

हम लोग पंप पर पहुँचे तो वहाँ मटरू काका थे। वह हम लोगों को देखकर प्रसन्न हो गये और बोले, "बिट्टन हम जा रहे हैं नशा करने, गये थे मिला नहीं। पानी तो खोल ही दिया है जा रहा है। बस आये और गये। बाबू साहेब से न कहना।" वह चले गये।

उनके जाते ही सबसे पहले मैने अपने कपड़े निकाले और गमछा पहन कर पानी में उतर गया। टंकी गहरी थी। पानी गले तक था। सुदामा मौसी थोड़ा हिचकिचाई तो नीलम दी ने उन्हें उकसाया। उन्होंने चुन्नी कमर में लपेटकर अपनी शलवार उतार दी फिर जम्पर भी उतार दिया। शरीर पर केवल उनकी समीच रह गयी। उनके गोल बड़े आम की तरह छातियों की आकृति साफ दिख रही थी। उसके नीचे और कुछ नहीं था। नलनी दी ने भी वैसे ही किया, लेकिन उनकी पीली समीच के नीचे सफेद रंग की बाडी थी जो दिख रही थी। उनके पानी में उतरते ही भीग कर सब साफ दिखने लगा। चुन्नी भी बार-बारी ऊपर आ जाती। मेरा गमछा भी। हम लोग पानी में खेलने लगे। सुदामा मौसी ने पानी के अन्दर नीलम दी की चुन्नी खींच ली और बाहर निकाल दिया। वह ठुनकने लगीं, "बुआ मैं नंगी हो गयी। दो न!"

"चल हट!" कहकर वह टंकी की दीवार पर बैठ गयीं। भीगने के कारण उनकी समीच उनकी छातियों को ढंकने में नाकाम हो रही थीं। दोनों छातिया साफ दिखने लगीं।

© 2008, http://www.antarvasna.com

मैं देखने लगा तो नीलम दी ने कहा, "क्या देख रहा रे राजेश?"

हालांकि मैं समझ गया कि यह सब यह लोग जान-बूझ कर रही हैं, लेकिन मैंने अकबकाने का दिखावा करते हुए कहा, "कुछ नहीं।"

तब सुदामा मौसी पानी में उतर कर नीलम दी कमर पकड़कर उन्हें ऊपर उठा दिया और उन्हें टंकी की दीवार पर बैठा दिया और उनकी मटके जैसी बाडी में कसी छातियों को पकड़कर कहा, "ले राजेश तू भी इसे पकड़।"

मैं हिचकिचाया तो मुझे एक हाथ से खीचकर पास कर लिया और मेरा हाथ पकड़कर उनकी छातियों पर रख दिया। बोलीं "रगड़ के लाल कर दे मेरे लाल!"

नीलम दी खिलखिलाने लगीं। और पानी में उतर कर सुदामा मौसी को पकड़कर किनारे दीवार से सटाकर थोड़ा ऊपर उठाकर उनकी समीच को ऊपर कर दिया उनकी नंगी छातिया मेंरे सामने आ गयीं। वह एक हाथ उनकी छातिया सहलाने लगीं और दूसरे हाथ से पानी के अन्दर मेरी नूनी को पकड़ कर खींचते हुए बोलीं, "आ न मीज अपनी मौसी की चूचियाँ!" मेरी नूनी को छोड़कर हाथ पकड़कर उनकी नंगी चूचियों पर रख दिया। मैंने सोचा अब बहुत हो चुका बेटा! और सहलाने लगा। वह भी सहलाने लगीं। सुदामा मौसी की आँखे बंद होने लगीं। वह इस तरह हिल रही थीं कि मुझे लगा कि नीचे पानी में नीलम दी उनकी योनि में अँगली डालकर हिला रही थीं। उन्होंने इशारा किया कि मैं उनकी चूचियों को चूसूँ। मैंने उन्हें गौर से देख तो वह तन गयी थीं। और फूल भी गयी थीं। उनके आगे के दाने तन गये थे। उनके मुँह से अजीब तरह की आवाजे भी निकल रही थीं। मैं उनकी चूची के दाने को मुँह में लेकर चूभलाने लगा। नीलम दी ने पानी में मेरी नूनी को दूसरे हाथों में लेकर तेज सहलाने लगीं। मेरी नूनी को छोड़कर मेरे हाथ को पकड़ कर अपनी मटके जैसी चूचियों पर रखकर फिर नूनी पकड़कर सहलाने लगीं। मैं भी सुदामा मौसी की चूची को पीते हुए नीलम दी की चूचियों को कपड़े के ऊपर से ही सहलाने लगा। कुछ देर बाद एकाएक सुदामा मौसी सुस्त सी पड़ गयीं तो नीलम दी ने कहा, "गयीं।"

फिर नीलम दी ने मुझे उठाकर टंकी की दीवार पर बैठा दिया और मेरा गमछा सामने से हटा

© 2008, http://www.antarvasna.com

दिया तो मेरी नूनी नंगी हो गयी। झाँट के बाल पानी के कारण चिपक गये थे। अभी मेरी झाँटे बड़ी और घनी भी नहीं हुई थीं। नीनम दी ने सुदामा मौसी से कहा, "बुआ इसका मुट्ठ मार!"

"कैसे?"

"जल्दी-जल्दी आगे पीछे करो।"

सुदामा मौसी ने मेरी नूनी को हिलाने लगीं। इसी बीच नीलम दी ने अपनी समीच और बाडी ऊपर चढ़ा ली और फुटबाल के ब्लाडर जैसी उनकी दोनों चूचियाँ बल्ल से निकल आयीं। मैं दोनों को अपने दोनों हाथों से दबाने लगा। नोचने लगा। मेरी नूनी कड़क होकर ऊपर उठ गयी। सुदामा मौसी हाथा तेज चलाने लगीं। अन्त में मैंने भल्ल से बीज फेंक दिया। वह पानी और कुछ नीलम दी के मुँह पर गिरा। मैं सुस्त हो गया। यद्यपि मैंने कई बार दोस्तों के साथ हथलस मारा था, लेकिन ऐसा आनन्द पहली बार आया।

"कैसा लगा?" नीलम दी ने पूछा।

मैंने कहा, "स्वर्ग में पहुँच गया।"

"अपनी मौसी को चोदेगा?" नीलम दी ने कहा।

मेरे कुछ कहने से पहले ही सुदामा मौसी ने कहा, " हाँ तेरी नीलम दी को तो बुर ही नहीं है!"

मैं जानती हूँ कि मेरी बुर नहीं चूत है, क्योंकि मैं दो लोगों से चुद चुकी हूँ बुआ, लेकिन तुम्हारी तो अभी चूत है, राजेश ही उसे चूत बनायेगा।"

"हाय राम तुम्हें दो लोगों ने चोदा है!" मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "अभी तो आप की शादी भी नहीं हुई है।"

"शादी तो तेरी भी नहीं हुई है, फिर तूँ अपने लन्ड से कैसे भल्ल-भल्ल बीज फेंक रहा रे हरामी।" मौसी ने दुलार भरे अन्दाज में कहा।

"अच्छा अब बात छोड़ो और दोनो मुझे पहले ठंडा करो।" नीलम दी ने कहा।

© 2008, http://www.antarvasna.com

मैं तब उनकी एक चूँची चूसने लगा और दूसरी सहलाने लगा। मौसी शायद पानी में उनकी चूत में अँगुली डाल कर हिलाने लगीं। उनकी आँखें बन्द होने लगीं। वह बड़बड़ाने लगीं, "हाय इतना आनन्द तो चुदाने में भी नहीं आ रहा था। चाचा जी तो खाली अन्दर डाल कर हिलाते हैं। बहुत हुआ तो किस हुआ! राम!! हाय राम! " और वह मेरे मुँह को अपनी चूचियों से हटाकर अपने मुँह के पास ले गयीं और अपनी जीभ मेरे मुँह में डालकर चूसने लगीं। मैं हाथों से उनकी चूचियों को सहलाने लगा। सहलाने लगा। वह एकाएक ढीली पड़ती बोलीं, "मैं गयी!!"

तीनों ही झड़कर ढंडे होकर एकदूसरे को नोचते दबाते खेलने लगे। तभी मटरू काका आते दूर से दिखे जल्दी से हमने अपने कपड़े बदले और उनके आने से पहले हम सब वहाँ से बाग की तरफ चले गये। वह आये तभी शायद बिजली चली गयी। कुछ देर प्रतीक्षा की और फिर हमारे पास आये हम लोग खाना खा रहे थे। वह बोले, "बिट्टी अब तो राजेश बाबू भी हैं मैं गाँव जा रहा हूँ जैसे ही बिजली आयेगी मैं आ जाऊँगा। " और वह चले गये । दोपहरी का सूरज सिर पर आ गया। दूर खेतों में काम करने वाले किसान भी अपने घरों को चले गये। बाग में पेड़ों की छाँव से ढंडक थी। मुझे पेशाब आयी तो मैं निकलने लगा तो सुदामा मौसी ने कहा, "कहाँ"

मैंने कहा, "पेशाब करने।"

वह बोलीं , "यही कर लो मैं देखूँगी कि तुम्हारा मूत कितनी दूर जायेगा।"

मेरी झिझक अबतक खत्म हो गयी थी तो मैं ने कहा, कि," तो मैं भी देखूँगा कि तुम जब मूतती हो तो कितनी तेज सीटी बजाती हो।" दोनों खिलखिलाकर हंसने लगीं।

मैं छप्पर से बाहर आकर मूतने लगा वह दोनों मेरे मूतते हुए लंड को देखने लगीं। फिर अन्दर आकर मैं चारपाई पर बैठा तो मुझे नीचे जमीन पर बिस्तर पर बैठाकर नीलम दी ने मेरे पैजामे को निकाल दिया और गीले गमछे को पहना दिया। मेरा लंड खुल गया। सुदामा मौसी उसे अँगुलियों में फंसाकर छेडने लगीं। दूसरी तरफ अपनी भारी चूचियों से कपड़ा हटाकर कुतिया की तरह बनकर मेरे मुँह पर उसे झुलाते हुए मेरे पूरे चेहरे पर रगड़ने लगीं। कड़े होकर उनके दाने काले जामुन के आकार के हो गये। उनमें रक्त भर गया। वह बेहद फूल गयीं। पत्थर की तरह कड़ी हो गयीं। सुदामा मौसी भी

© 2008, http://www.antarvasna.com

अकड़ने लगीं तो नीलम दी ने उन्हें वहीं लिटाकर उनकी शलवार खोलकर नीचे कर दी। उनकी काली झाँटों से भरी चूत सामने आ गयी। उनका चना टाइट होकर बाहर की तरफ उभर आया था। दी ने मुझे सहलाने का इशारा किया तो मैं हथेली के निचले हिस्से से उनकी चूत को रगड़ने लगा। मेरी हथेली गीली हो गयी। हथेली को एक तरफ दबाया तो अन्दर लाल हिस्सा दिखाई देने लगा। दी इसी बीच उनकी चूचियों से जम्पर ऊपर खिसकाकर अपनी कड़ी और पहाड़ जैसरी चूचियों से रगड़ने लगीं। सुदामा मौसी ने नीचे से ही नशीली आवाज में कहा, "राजेश इसकी बेल जैसी कड़ी चूचियों को फोड़ दे।"

इसकी भंडारे जैसी चूत के रगड़ के फाड़ दे राजेश मैं तो हूँ ही अपनी तुझसे चुदवाने के लिए।"

मौसी ने नशीली ही आवाज में कहा, "इसके पपीते को फोड़ दे तो मैं तुझे मटरू काका की पोती की अमरूद जैसी चूचियों को दबाने की व्यवस्था करवा दूँगी।

मुझे मौसी और दीदी के अलावा किसी को नहीं चोदना है।" मैंने कहा ।

"चल तो बता पहले किसे चोदेगा। कुआँरी या दो बार की चुदी चूत को?" नीलम दी ने मस्तानी आवाज में कहा, "चुदास तो दानों ही गयी हैं।"

मैं मौसी की चूत पर अपनी हथेलियों को तेजी से रगड़ रहा था। वह उत्तेजना में मुँह से हों-हों की आवाज निकाल रही थीं। एकाएक वह फिर सुस्त पड़ गयीं। इसका मतलब था कि वह झड़ गयीं। तभी नीलम दी ने अपनी शलवार को एक टांग से निकालकर दोनों टांगों को छितराकर मेरे लंड पर अपनी चूत का निशाना साधकर बैठ गयीं। खस सेमेरा लंड उनकी चूत में समा गया। वह ऊपर-नीचे घपघपा उठने-बैठने लगीं

सुदामा मौसी बाहर जाकर चारो तरफ देख आयीं कि कहीं कोई आ तो नहीं रहा है, फिर वह हमारी चुदाई देखने लगीं। नीलम दी ने हाँफते हुए कहा, "बुआ तुझे राजेश से कुतिया बनवाकर चुदवाऊँगी।.....तो मित्रों मेरे अतीत की वह घटना जिसे मैं आप से बाँट रहा था, यहीं खत्म नहीं हुई लम्बी कहानी है। फिर कभी अवसर मिला तो आप से बाँटूँगा। आप आगे की बातें जानने और अपनी प्रतिक्रिया के साथ मेरे ईमेल से संपर्क कर सकते हैं। my mail hai---rajhindi@gmail.com

© 2008, http://www.antarvasna.com